साध

सुभद्रा कुमारी चौहान

3XNSEQ

जीवन परिचय

हिन्दी की सुप्रसिद्ध कवयित्री और लेखिका सुभद्रा कुमारी चौहान की दो कविता संग्रह तथा तीन कथा संग्रह प्रकाशित हुए पर उनकी प्रसिद्धि झाँसी की रानी कविता के कारण है। ये राष्ट्रीय चेतना की एक सजग कवयित्री रही हैं। वर्षों तक सुभद्रा कुमारी की 'झांसी वाली रानी' और 'वीरों का कैसा हो वसंत' शीर्षक कविताएँ युवाओं के हृदय में देशप्रेम के भाव को जागृत करती रही हैं। उनकी चर्चित कृतियों में 'बिखरे मोती', 'उन्मादिनी', 'सीधे सादे चित्र', 'मुकुल', 'त्रिधारा' और 'मिला तेज से तेज' प्रमुख हैं।

साध : सुभद्राकुमारी चौहान

मृदुल कल्पना के चल पँखों पर हम तुम दोनों आसीन।
भूल जगत के कोलाहल को रच लें अपनी सृष्टि नवीन।।
वितत विजन के शांत प्रांत में कल्लोलिनी नदी के तीर।
बनी हुई हो वहीं कहीं पर हम दोनों की पर्ण–कुटीर।।
कुछ रूखा–सूखा खाकर ही, पीतें हों सरिता का जल।
पर न कुटिल आक्षेप जगत के करने आवें हमें विकल।।
सरल काव्य–सा सुंदर जीवन हम सानंद बिताते हों।
तरु–दल की शीतल छाया में चल समीर–सा गाते हों।।
सरिता के नीरव प्रवाह–सा बढ़ता हो अपना जीवन।
हो उसकी प्रत्येक लहर में अपना एक निरालापन।।

रचे रुचिर रचनाएँ जग में अमर प्राण भरने वाली।

दिशि–दिशि को अपनी लाली से अनुरंजित करने वाली।।

तुम कविता के प्राण बनो मैं उन प्राणों की आकुल तान।

निर्जन वन को मुखरित कर दे प्रिय! अपना सम्मोहन गान।।

शब्दार्थ :–

मृदुल – कोमल, **चल** – चंचल; **वितत –** विस्तृत, फैला हुआ; **विजन –** निर्जन, जनहीन; **कोलाहल –** शोरगुल; **सृष्टि** – संसार, जगत; **प्रांत –** भूभाग; **कल्लोलिनी** – कल–कल की आवाज करने वाली; **पर्ण–कुटीर –** पत्तों से निर्मित कुटिया; **कुटिल जगत आक्षेप –** संसार के छल कपट पूर्ण या विद्वेषपूर्ण आरोप/दोषारोपण; **तरुदल** – वृक्षों का समूह; **निराला** – अनुपम, विलक्षण; **रुचिर** – रुचिकर, सुंदर; **दिशि–दिशि** – दिशा–दिशा में।

पाठ से

1. कविता में किस प्रकार की सृष्टि रचने की मृदुल कल्पना की गई है।
2. कवयित्री को किस प्रकार का जीवन व्यतीत करने की चाहत है और क्यों?
3. कविता की पंक्ति ''सरिता के नीरव प्रवाह–सा बढ़ता हो अपना जीवन'' का भाव स्पष्ट कीजिए।
4. रुचिर रचनाओं से कवयित्री का क्या आशय है?
5. 'जीवन में निरालापन' कहकर कवयित्री ने क्या संकेत किया है?
6. कविता के शीर्षक 'साध' से जीवन की जिन अभिलाषाओं का बोध होता है, उन्हें अपने शब्दों में लिखिए।
7. ''तुम कविता के प्राण बनो, मैं उन प्राणों की आकुल तान।
   निर्जन वन को मुखरित कर दे प्रिय! अपना सम्मोहन गान।।''
   उपर्युक्त काव्य पंक्तियों का भाव अपने शब्दों में लिखिए।

पाठ से आगे

1. हम अपने जीवन को कैसा बनाना चाहते हैं और आस–पास के लोगों तथा प्रकृति से हमें कैसे सहयोग मिलता है? आपस में चर्चा कर लिखिए।

3XXNGD

2. जीवन के प्रति अपने मन में उठने वाली लहर या कल्पनाओं के बारे में विचार करते हुए उन्हें लिखिए।

3. आपके आस–पास ऐसे लोग होंगे जो अभावों में रहते हुए भी दूसरों का सहयोग करने को सदैव तत्पर होते हैं, ऐसे लोगों के बारे में साथियों से चर्चा कर उनके भावों को लिखें।

4. आपको किन–किन कवियों की कविताएँ अच्छी लगती हैं ? आपस में चर्चा कर उन कवियों की विशेषताओं को लिखिए। यह भी बताइए कि वे कविताएँ आपको क्यों अच्छी लगती हैं?

भाषा के बारे में

1. विशेषण– संज्ञा अथवा सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्दों को विशेषण कहते हैं तथा जिन संज्ञा अथवा सर्वनाम शब्द की विशेषता बताई जाती है उसे विशेष्य कहते हैं। प्रस्तुत कविता में विशेषण और विशेष्य पदों का सघन प्रयोग कवयित्री द्वारा किया गया है, जैसे मृदुल कल्पना, नवीन सृष्टि, पर्ण कुटीर, सरल काव्य आदि। पाठ से अन्य विशेषण और विशेष्य को ढूँढ़ कर वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

2. कुछ विशेषण शब्द क्रिया की विशेषता बताते हैं जैसे – ऊँची कूद, तेज चाल, धीमीगति आदि। क्रिया की विशेषता बताने वाले इन विशेषणों को क्रिया विशेषण कहते हैं। किसी अखबार या पत्रिका को पढ़िए और क्रिया विशेषणों को खोज कर लिखिए।

3. कविता में दिए गए विशेष्य पदों में नए विशेषण या क्रियाविशेषण को जोडकर नए पदों का निर्माण किया जा सकता है। जैसे–मृदुल–कल्पना, निर्मल–छाया, सुरीली–तान, निष्काम–जीवन। कविता में प्रयुक्त कुछ अन्य विशेष्य नीचे दिए गए हैं। इनमें विशेषण या क्रियाविशेषण लगाकर नए पदों का निर्माण कीजिए। (आक्षेप, कुटीर, काव्य, प्रवाह, रचनाएँ, वन, तान, प्रांत, विजन, नदी।)

4. विशेषण के कई भेद (प्रकार) होते हैं। शब्द अपने 'विशेष्य' के गुणों की विशेषता का बोध कराते हैं, गुणवाचक विशेषण कहलाते हैं। जैसे – अच्छा आदमी, लंबा लड़का, पीला फूल, खट्टा दही। अपने शिक्षक की सहायता से विशेषण के अन्य भेदों की पहचान कीजिए।

5. साध कविता में कई विशेषण शब्द हैं। उन शब्दों को पहचानिए तथा विशेषण के भेदों के अनुरूप वर्गीकृत कीजिए।

6. कविता में, **प्राण भरना** अर्थात जीवंत करना, मुहावरे का प्रयोग हुआ है। प्राण शब्द से सम्बन्धित कुछ अन्य मुहावरे इस प्रकार हैं – **प्राण सूखना** = अत्यंत भयग्रस्त होना, **प्राण पखेरू उड़ना** = मृत होना, **प्राणों की आहुति देना** = बलिदान करना। 'प्राण' शब्द से अन्य मुहावरे खोजकर उनका अर्थ लिखिए तथा वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

योग्यता विस्तार

1. कुछ कविताएँ प्रकृति के कोमल भावों को अभिव्यक्त करती हैं। कोमल भावों को प्रस्तुत करने वाली कविताओं को पुस्तकालय से ढूँढ़ कर साथियों के साथ वाचन कीजिए और शब्द, अर्थ, भाव, तुक आदि पर चर्चा कीजिए।

2. सुभद्रा कुमारी चौहान की अन्य कविताओं जैसे 'कदंब का पेड़' 'मेरा नया बचपन', मेरा जीवन', 'खिलौनेवाला' को खोजकर पढ़िए और उनके भाव लिखिए।

4AKSYK